सर्व के प्रति प्यार ही है, जीवन में वाह-वाह का आधार - डॉ. अरूण कुमार पण्डा, आइएएस, सचिव, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार

आज सारी दुनिया में पैसा, प्रतिष्ठा और पराक्रम (पावर) का खेल चल रहा है। लेकिन बीके में वाह जिंदगी वाह जैसे विषयों के बारे में कार्य हो रहा है, यह सुनकर मन को सुकून मिलता है। विवेकानंद, महात्मा गॉधी जैसे महापुरूषों के जीवन में वाह-वाह थी क्योंकि उनका जीवन दूसरों के लिए था। ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्थाएं जीवन को नये अंदाज में जीने की राह दिखाते हैं, एक-दूसरे से प्यार करना सिखाती हैं। राजयोग का अभ्यास आज सबसे आवश्यक है। संयमित जीवन से हम मुस्कुराना सीख सकेंगें और हमारा जीवन वाह-वाह हो जायेगा। लोधी रोड केन्द्र को 20वें वार्षिकोत्सव पर मैं अनंत शुभकामनाएं देता हूँ। **उक्त विचार डॉ. अरूण कुमार पण्डा, आइएएस, सचिव, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार ने व्यक्त किए।**

डॉ. रश्मि सिंह, आइएएस, सचिव, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् (एनडीएमसी) ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का लोधी रोड सेवा केन्द्र जन-जन की सतत् और निस्वार्थ सेवा में लगा हुआ है। ब्रह्माकुमारीज़ के लोग जब भी मुझसे मिलने आते हैं यह कोई शिकायत लेकर नहीं आते, अपितु मुझे कुछ देकर जाते हैं। आज ब्रह्माकुमारीज जैसी संस्थाओं की समाज में अत्यंत आवश्यकता है। यह संस्था दिल्ली और देश की शान है। मैं 20वें वार्षिक उत्सव पर एनडीएमसी की ओर से बधाईयां देती हूँ।

राजयोगिनी आशा दीदी, संचालिका, ओम शांति रिट्रीट सेंटर ने कहा कि जिंदगी वाह-वाह तब हो सकती है जब व्यक्ति को अपनी पूरी पहचान हो एवं अपने पिता का सम्पूर्ण परिचय हो। इंजीनियर और डॉक्टर बनना एक बात है लेकिन यदि यह पता लग जाए कि मेरी सत्य पहचान क्या है तो जिंदगी वाह-वाह होने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। मुझे पुण्य कर्मों का खाता बढ़ाना है । मेरे कर्म जब

दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाते हैं तो दुआएं प्राप्त होती हैं। मैं चैतन्य शक्ति आत्मा हूँ, अति सूक्ष्म हूँ, मैं इन कर्मेंद्रियों की मालिक हूँ। जब हम सीट पर सैट होकर कार्य करते हैं तो खुशी, शक्ति और आनंद का अनुभव होता है। **यदि मन कमजोर है तो परिस्थिति बड़ी लगती है। यदि मन स्थिर है तो परिस्थिति चुनौती लगती है और यदि मन शक्तिशाली है तो परिस्थिति उपलब्धि बन जाती है।** मन की तार परमात्मा से जोड़ने से शक्ति प्राप्त होती है और जीवन में वाह-वाह होती है। रोल और सोल के अंतर को समझने की जरूरत है। मैं आत्मा अनेक प्रकार की भूमिकाएं निभा रही हूँ, पार्ट अलग है और मैं पार्ट बजाने वाला अलग हूँ, ऐसी सोच होने से जीवन प्रसन्नता से भरपूर हो जाता है।

संसार में तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं प्रथम वे हैं जो परिवर्तन के वाहक होते हैं। दूसरे प्रकार के व्यक्ति वे हैं जो परिवर्तन होते देखते रहते हैं और तीसरे प्रकार के मनुष्य वे हैं जो परिवर्तन से अंजान होते हैं। स्वयं से प्रश्न करें कि आप अपने आप को किस श्रेणी में रखते हैं? वाह-वाह उनके जीवन में होगी जो परिवर्तन के वाहक बनेंगे।

राजयोगिनी पुष्पा दीदी, संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़,करोल बाग़, नई दिल्ली ने कहानी के माध्यम से समझाया कि हमें सदैव श्रेष्ठ कर्म करने चाहिए। अच्छे कर्म करने से वर्तमान और भविष्य दोनों ही श्रेष्ठ बन जाते हैं और जिंदगी में वाह-वाह होने लगती है।

वार्षिकोत्सव में ब्र.कु आशा बहनजी, खान पुर सेवा केन्द्र, ब्र.कु. सुमित्रा बहनजी, कुतुब एन्क्लेव सेवा केन्द्र, ब्र.कु. उर्मिला बहन, स्वास्थ्य विहार सेवा केन्द्र, ब्र.कु. भावना बहन, हस्तसाल सेवा केन्द्र, ब्र.कु. बलवीर बहन, शाहदरा सेवा केन्द्र, ब्र.कु. जवाहर मेहता, राजौरी गार्डन सेवा केन्द्र सहित अन्य ने भाग लिया।

इससे पूर्व ब्र.कु. गिरिजा, संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़, लोधी रोड, नई दिल्ली ने अतिथियों का स्वागत किया। ब्र.कु. पीयूष भाई, जोनल कोऑर्डीनेटर, वैज्ञानिक

एंव अभियंता प्रभाग ने सफल मंच संचालन किया। बीके बालिकाओं ने मन भावन नृत्य प्रस्तुत करके श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। अंत में सभी ने ब्रह्मा भोजन स्वीकार किया।